# प्राकृतिक खेती से सतत कृषि विकास

**निदा पटेल*, माधुरी चौरे*** और **पंकज सूर्यवंशी***

"पिछले कई वर्षों से खेती में हानिकारक कीटनाशकों का लगातार उपयोग किया जा रहा है। इससे कृषि में लागत बढ़ रही है और मृदा के प्राकृतिक स्वरूप में भी नुकसानदायक बदलाव हो रहे हैं। रासायनिक खेती से प्रकृति और मनुष्य के स्वास्थ्य में काफी गिरावट आई है। रासायनिक खाद और कीटनाशकों के उपयोग से खाद्य पदार्थ अपनी गुणवत्ता खो देते हैं। इसके सेवन से हमारे शरीर पर बुरा असर पड़ता है। इनके उपयोग से मृदा की उर्वराशक्ति प्रभावित हो रही है। इससे मृदा के पोषक तत्वों का संतुलन बिगड़ गया है। मृदा की इस घटती उर्वरा क्षमता को देखते हुए जैविक खाद का उपयोग जरूरी हो गया है।"

प्राकृतिक खेती, कृषि की प्राचीन पद्धति है। इस खेती में रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। इस प्रकार की खेती में, जो तत्व प्रकृति में पाए जाते हैं, उन्हीं को खेती में कीटनाशक के रूप में काम में लिया जाता है। यह मृदा के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखती है। प्राकृतिक खेती का मुख्य आधार देसी गाय है।

## प्राकृतिक खेती के फायदे

### कृषकों को लाभ

इस खेती में मृदा की उपजाऊ क्षमता और सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है। रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में कमी आती है। फसलों की उत्पादकता और बाजार में जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से किसानों की आय में भी वृद्धि होती है।

### मृदा की दृष्टि से

जैविक खाद के उपयोग से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है। भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती है। भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होता है।

### पर्यावरण की दृष्टि से

भूमि जलस्तर में वृद्धि होती है। मृदा, खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है। कृषि अपशिष्ट का उपयोग खाद बनाने में होने वाली फसल में रोगों में कमी आती है।

### प्राकृतिक खेती के संचालन चक्र

जीवामृत, बीजामृत, आच्छादन, वापसा।

## प्राकृतिक खेती के सिद्धांत

### सह-फसल

इस प्रक्रिया में मुख्य फसल की पंक्तियों के बीच ऐसी फसल उगाना, जो भूमि में नाइट्रोजन की आपूर्ति तथा किसानों की खेती की लागत की पूर्ति करे।

### मेड़ें तथा पंक्तियां

खेत के बीच पंक्तियों में मेड़ तथा नाली बनाई जाती हैं। इनमें वर्षा का पानी एकत्रित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लंबे वर्षा काल के समय ये नालियां तथा बड़े खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी में मदद करती हैं।

### स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां

इस खेती द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होता है। इससे खेतों की गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है।

### गोबर

भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र इस कृषि पद्धति में उन्नत माना गया है। इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे पशुओं के गोबर की तुलना में काफी अधिक होती है।

### मुख्य फसलें

धान, गेहूं, गन्ना, मक्का एवं विभिन्न प्रकार की दलहन व सब्जी फसलें आदि।

### जीवामृत

धान के लिए 1 लीटर पानी में 50 मि.ली., गेहूं के लिए 1 लीटर पानी में 80 मि.ली. व दलहनी फसलों के लिए 1 लीटर पानी में 30 मि.ली. महीने में दो बार उपयोग कर सकते हैं, जब तक फसल दुधिया अवस्था में न आ जाए।

### बीजामृत

धान व गेहूं के बीजों के लिए 400 मि.ली. प्रति कि.ग्रा. तथा दलहन फसलों के लिए 300 मि.ली. प्रति कि.ग्रा. उपयोगी रहता है।

### मुख्य फसल प्रणालियां

धान, गेहूं, दलहन फसलें, धान/मक्का-परत/परती भूमि-हरी खाद फसलें धान/मक्का-दलहन फसलें,धान/मक्का-तिल-हरी खाद फसलें, धान/मक्का-सब्जियां आदि।

*सहायक प्राध्यापक, कृषि विज्ञान संकुल काष्टी, मालेगांव (महाराष्ट्र)

सारणी: जैविक खाद में विभिन्न पोषक तत्वों की मात्रा

| पोषक तत्व (प्रतिशत) | एन | पी | के |
|---|---|---|---|
| जीवामृत | 1.40–2.10 | 0.16–0.18 | 0.26–0.28 |
| बीजामृत | 2.10–2.30 | 0.10–0.19 | 0.40–0.50 |

**घनजीवामृत (एक एकड़ भूमि के लिए)**

**घटक**

देसी गाय का गोबर 100 कि.ग्रा., गुड़ 1 कि.ग्रा., बेसन 2 कि.ग्रा., खेत या मेड़ की मिट्टी, एक मुट्ठी, देसी गाय का मूत्र आवश्यकतानुसार।

**विधि**

गोबर, गुड़, बेसन व मृदा को अच्छी प्रकार से मिला लें। आवश्यकतानुसार इसमें थोड़ा-थोड़ा गौमूत्र मिलाएं। मिश्रण को 2-4 दिनों तक छाया में सुखाएं। अच्छे प्रकार सुखाने व बारीक करने के बाद खेत में उपयोग करें।

**बीजामृत (100 कि.ग्रा. बीज के लिए)**

**घटक**

पानी 20 लीटर, देसी गाय का गोबर 5 कि.ग्रा., देसी गाय का मूत्र 5 लीटर, चूना 250 ग्राम, खेत या मेड़ की मृदा एक मुट्ठी।

**विधि**

उपरोक्त सामग्रियों को अच्छी तरह टंकी में घोलने के बाद उपयोग में लाएं। ■

## जीवामृत (एक एकड़ भूमि के लिए)

**घटक**

पानी 200 लीटर, देसी गाय का गोबर 10 कि.ग्रा., देसी गाय का मूत्र 5-10 लीटर, गुड़ 1 से 1.5 कि.ग्रा., बेसन 1 से 1.5 कि.ग्रा., खेत या मेड़ की मिट्टी 1 मुट्ठी।

**विधि**

उपरोक्त सामग्रियों को अच्छी तरह टंकी में घोल लें। घोल को घड़ी की सुई की दिशा में 2-3 मिनट तक घोलें। टंकी को बोरी से ढककर 72 घण्टों तक छांव में रख दें। सुबह शाम दो-दो मिनट घोलें। इस घोल का उपयोग 7 दिनों के अन्दर करें।


## भाकृअनुप की मासिक लोकप्रिय पत्रिका
## 'खेती' जून, 2024 अंक के प्रमुख आकर्षण

- मीठे पानी में मोती पालन
- समन्वित कृषि प्रणाली है फायदेमंद व्यवसाय
- चना एवं मटर की उन्नत प्रजातियां
- मृदा में सल्फर की कमी दूर करे यूरिया गोल्ड
- गौ-आधारित प्राकृतिक खेती
- टिकाऊ खाद्य उत्पादन के लिए एकीकृत कृषि
- एक्वापोनिक्स विधि से करें मछलीपालन
- फसल उत्पादकता पर उच्च क्यारी रोपण का प्रभाव
- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई
- कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपयोगिता
- स्वीटकॉर्न की उन्नत खेती
- गेहूं की फसल में रोगों की रोकथाम
- चने का विनाशकारी उकठा रोग
- पोषण से भरपूर केंचुआ खाद

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012
दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in